
shrI yAdagiri laxmInRisinha stotram

श्रीयादगिरि लक्ष्मीनृसिंहस्तोत्रम्

Document Information

Text title : yAdagiri lakShmInRisi.nha stotra

File name : yAdagirilaxminRisimhastotra.itx

Category : vishhnu, dashAvatAra, stotra, vAngIpuram-narasinhAchArya, vishnu

Location : doc_vishhnu

Author : vA.ngIpuram narasi.nhAchArya

Transliterated by : Venkata N Vangeepuram vangeepuram at rediffmail.com

Proofread by : Venkata N Vangeepuram vangeepuram at rediffmail.com Great grandson of the composer

Latest update : December 15, 2004

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

February 2, 2024

sanskritdocuments.org

श्रीयादगिरि लक्ष्मीनृसिंहस्तोत्रम्



नरसिंह रमेश कृपा जलधे
सुरवैरि डिशय विदारणतः
नरलोक छितार्तस्सततम्
विजयीभव यादगिरीश विभो! ॥ १ ॥

करुणारसपूर विधेयतयाऽ
सुरबालक बाधनिवारणतः
सममेव विदारितवानसुरम्
विजयीभव यादगिरीश विभो! ॥ २ ॥

नरकेसरि रुपनिरुपाणतः
सुरशेखर रुप निरुपकताम्
गमयन् शमयन् नरलोकुरुजम्
विजयीभव यादगिरीश विभो! ॥ ३ ॥

जनताभिमतार्पण शीलपते
भवभीत समुद्भ्रष्टैकमते
सुरनायक नायक लोकपते
विजयीभव यादगिरीश विभो! ॥ ४ ॥

नरलोकभयानक रुपमिदम्
प्रधितम् रथयन् नरलोकभियाम्
सकलस्थतु शांति करोभिमतः
विजयीभव यादगिरीश विभो! ॥ ५ ॥

अवतार गणेश्रति चित्रपदम्
नरकेसरि मिश्रित रुपमिदम्
प्रकटीकुरुतेऽघटिते घटनाम्
तवदिव्यविधाम् नरसिंह विभो! ॥ ६ ॥

करुणाकलयाभिल लोकमिदम्
सकलार्थ समृद्धि रमाभरणम्
कलयन् जनिकारणकारणभो
विजयीभव यादगिरीश विभो! ॥ ७ ॥

पिताश्रीनृसिंहः विभुश्रीनृसिंहः
गतिश्रीनृसिंहः धनम् श्रीनृसिंहः
भजेश्रीनृसिंहम् - भजे श्रीनृसिंहम्
नृसिंहम् भजे यादशैवेशमीशम् ॥ ८ ॥

नमेज्ञानमात्यंतिको भक्तिभावः
नमेसाधुययात्वमेवासि सर्वम्
धृतीवापिविश्वास औषः त्वदीयः
त्वदीयोप्यहम् सर्वमेवम् त्वदीयम् ॥ ९ ॥

त्वदीयेसमस्ते मदीयत्वभावात्
शिरात्संभृतात् मोहितोनाथसत्यम्
धृदानीम् तु लक्ष्मीशसेवाविशेषात्
निरस्तम् छि मे मोहजतम् समस्तम् ॥ १० ॥

अजनतामयानाथ! जन्मकोटिशतैरपि
कृतानि सर्वपापानि क्षंतव्यानि दयामय ॥ ११ ॥

॥ धृति श्री वांगीपुरम् नरसिंहाचार्य विरचितं
श्री यादगिरि लक्ष्मीनृसिंह स्तोत्रं समाप्तम् ॥

Encoded and proofread by Venkata N Vangeepuram
vangeepuram@rediffmail.com

—
shrI yAdagiri laxmInRisinha stotram
pdf was typeset on February 2, 2024
—

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

